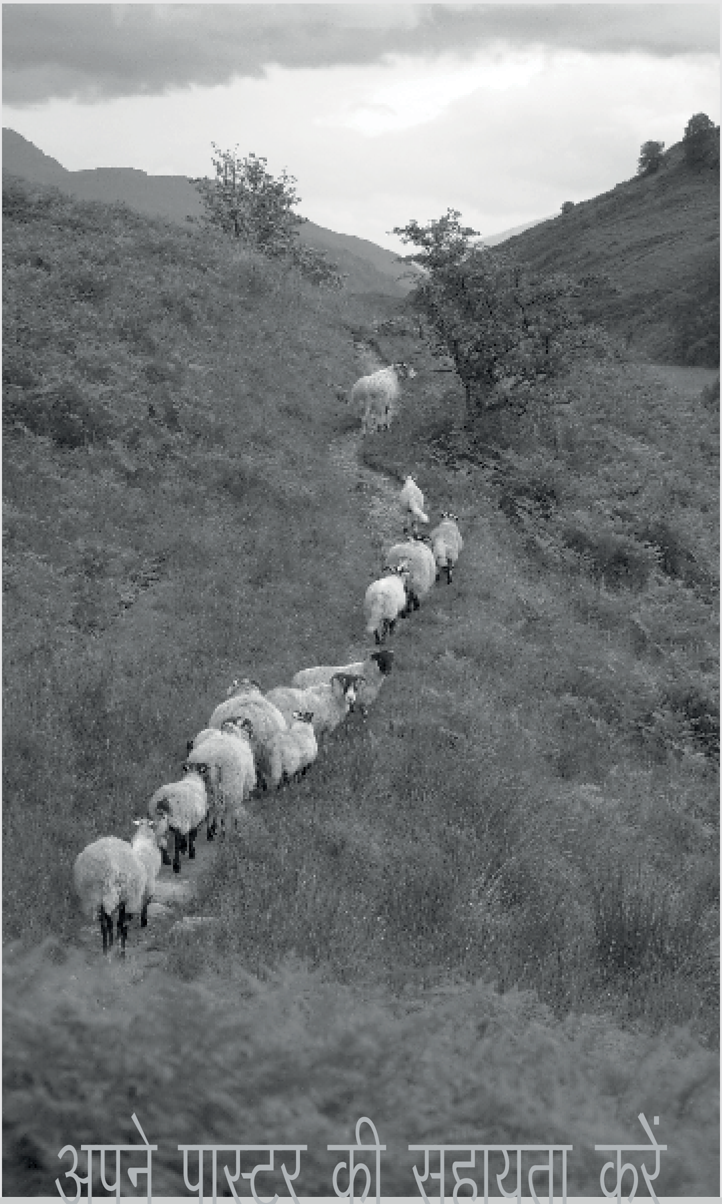

अपने पास्टर की सहायता कैसे करें

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बेंगलोर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - How to Help Your Pastor)

अपने पास्टर की सहायता करें

अपने पास्टर की सहायता कैसे करें

विषय सूची

परिचय		1
1.	पास्टर और कलीसिया के स्टाफ के लक्ष्य	4
2.	अपने पास्टर की कैसे सहायता करें	8
3.	आपका पास्टर एक मनुष्य है	22

परिचय

एक मजबूत कलीसिया को बनाने, की इच्छा से इसमें मजबूत लोगों को खड़ा करने की इच्छा से मैं यह संदेश बाँट रहा हूँ- "अपने पास्टर की सहायता कैसे करें।" मैं विश्वास करता हूँ कि आप ऐसा करने में मेरे हृदय की प्रेरणा को समझेंगे। इस पुस्तक में प्रस्तुत सन्देश व्यक्तिगत रूप से किसी के विरुद्ध नहीं है। यदि मुझे किसी को व्यक्तिगत रुप से कुछ स्पष्ट करना होता तो मैं एक साथ बैठकर करता न कि इस पुस्तक के माध्यम से।

हममें से जो माता-पिता हैं वे जानते हैं कि जब हम बच्चों को पालते हैं तब कभी-कभी बहुत क्रोधित हो जाते हैं, यद्यपि हम प्राय: उन पर प्रेम की बौछार करते हैं। यह इसलिए नहीं कि हम अपने बच्चों से घृणा करते हैं बल्कि इसलिए कि हम उन्हें एक मजबूत व्यक्ति की तरह खड़ा करना चाहते हैं। इसी प्रकार जब हम कलीसिया में मजबूत लोग खड़े करना चाहते हैं, तब हमें उन्हें यह सिखाने की आवश्यकता होती है कि उन्हें परमेश्वर के भवन में कैसे व्यवहार करना चाहिए।

कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है कैसा बर्ताव करना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:15)।

पौलुस तीमुथियुस को लिखते हुए उसे बता रहा है कि एक व्यक्ति का स्थानीय कलीसिया में व्यवहार करने का एक ठीक तरीका होता है। दूसरे शब्दों में पौलुस कहते हैं कि परमेश्वर के भवन में व्यवहार करने का सही तरीका है और विश्वासियों को इसे सिखाने की आवश्यकता है। दुर्भाग्यवश, इस विषय में अधिक शिक्षा नहीं दी जाती है और प्रत्येक जन अपनी मन मर्जी से चलता रहता है। कलीसिया में लोग वही करते हैं जिसे वे ठीक समझते हैं और कलीसिया को विभिन्न दिशाओं में खींच कर ले जाते और कलीसिया कहीं नहीं पहुँच पाती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति वही करता है जो उसे ठीक जान पड़ता है तो हमारा घर झंझट

और गड़बड़ी से भरा होगा। परन्तु परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है।

हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो (1 कुरिन्थियों 1:10)।

इस वचन में एक निवेदन अथवा एक सुझाव नहीं है परन्तु एक प्रार्थना और विनती है जो स्वयं परमेश्वर के अधिकार से आती है। परमेश्वर की आज्ञा स्थानीय कलीसिया के लिए प्रेरित पौलुस के द्वारा यहाँ है:

- तुम सब ही बात बोलो। यह बात असम्भव लग सकती है।
- तुम्हारे बीच में बँटवारा (अलगाव अथवा दूरी) नहीं होना चाहिए।
- तुम सब पूर्णरुप से एकता में जुड़े रहो (पूर्णरुप से एकता में)।
- तुम सब एक मन और एक समझ रखो।
- तुम सब का एक ही निर्णय, उद्देश्य और विचार हो।

जब हम कुरिन्थियों की कलीसिया पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि वह एक "अजीब" कलीसिया थी जो हमारी आप की कलीसिया के समान थी। उसमें बहुत सी बातें गलत थीं। उसमें कुछ लोग कहते थे हम अपुल्लोस के है और कुछ कहते थे कि हम पौलुस के हैं। विवाह, मूर्तियों को बलिदान किए गए भोजन, अन्य भाषा में बोलने, आत्मा के वरदानों के विषय में लोगों के विभिन्न विचार थे। सबसे बड़ा अपराध यह था कि वे कलीसिया में प्रभु भोज के समय अपना नाश्ता करते थे और थोड़े से टुकड़े में सन्तुष्ट न होकर पूरी रोटी और सारा दाखमधु पी लेते थे। पौलुस को उन्हें उनके व्यवहार के विषय में डाँटना और निर्देश देना पड़ा कि वे कैसे ठीक व्यवहार करें (1 कुरिन्थियों 11:17-33)। पौलुस इस कारण विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को निर्देश देते हुए लिखता

है कि वे एक ही बात बोलें, उनके बीच में बँटवारा न हो, आपस मे पूर्णरुप से जुड़े रहें, और एक सा मन, समझ, विचार और निर्णय रखो।

मैं विश्वास करता हूँ कि यदि परमेश्वर हमें कुछ करने की आज्ञा देता है तो वह सम्भव है क्योंकि परमेश्वर हमें कुछ ऐसा करने की आज्ञा नहीं देगा जिसे हम न कर सकें। यदि वह ऐसा करता तो इसका अर्थ होता कि वह चिड़ाता है। **पौलुस जिस प्रकार की कलीसिया के विषय में बात करता है, तथा जिसे प्रत्येक पास्टर चाहता है, वह कलीसिया बनना हमारे लिए सम्भव है।**

1

पास्टर और कलीसिया के स्टाफ के लक्ष्य

उससे पहले कि हम इस बात पर चर्चा करें कि आप कैसे अपने पास्टर की सहायता कर सकते हैं, आइए पहले उन लक्ष्यों को समझें जो पास्टर और कलीसिया के स्टाफ के सामने है।

मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूँगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएँगे (यिर्मयाह 3:15)।

परमेश्वर के हृदय के अनुसार पास्टर होने के नाते पास्टर को परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के लिखित वचन से आत्मिक ज्ञान और समझ से भरना चाहिए, किसी और स्त्रोत से नहीं। पास्टर को उस समझ को देना चाहिए जो परमेश्वर के पवित्रात्मा से आती है।

उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ (इफिसियों 4:11-13)।

यह भाग पास्टर और जो लोग वचन की सेवा में हैं उनके काम की चर्चा करता है। सेवा का काम-पास्टर का नहीं है आपको करना है। आप सेवक है। कलीसिया मे जो आपके साथ बैठा है वह आपके साथ सेवा का काम करेगा, पास्टर नहीं, न ही शिक्षक, न ही प्रचारक, न ही भविष्यद्वक्ता और न ही प्रेरित-क्योंकि इन पाँच सेवाओं की भूमिका यह है कि सन्तों को तैयार करें ताकि वे सेवा का काम कर सकें। वास्तव में पास्टर का काम बहुत सरल है- वह आपको तैयार करे। आप ही है

जो इस काम को करेंगे। आप मात्र कलीसिया के सदस्य ही नहीं हैं बल्कि एक सेवक भी है। आपकी "मानसिकता कलीसिया के सदस्य" की नहीं होनी चाहिए। आप सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सेवक है और आप यहाँ पर इसलिए हैं कि आप को सेवा के काम के लिए तैया किया जाए, मसीह की देह के निर्माण हेतु "जब तक हम सब विश्वास की एकता तक नहीं पहुँच जाते...मसीह की परिपूर्णता तक" (इफिसियों 4:13)। अत: पास्टर और कलीसिया के स्टाफ के रूप में हमारी जिम्मेदारी यह है कि सन्तों को मसीह की परिपूर्णता तक पहुँचने के लिए तैयार करें ताकि सन्त सेवा का काम कर सकें। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक विश्वासी उसके राज्य में सेवक बनें।

जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध (टेलेइयोस) करके उपस्थित करें (कुलुस्सियों 1:28)।

पास्टर का प्रचार और शिक्षा देने का कारण यह नहीं कि वे मनोरंजन करें परन्तु यह कि विश्वासियों को मसीह के समक्ष सिद्ध (टेलेइयोस) करके प्रस्तुत करें। वचन में यूनानी शब्द टेलेइयोस प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है–सम्पूर्ण स्वस्थ मनुष्य। हमारा लक्ष्य है कि हम प्रत्येक विश्वासी को परिपक्वता तक ला सकें–मसीह में पूर्ण स्वस्थ। हम मसीह में बालकों का स्वागत करते हैं, परन्तु यह नहीं चाहते कि वे वैसे ही बने रहें। पास्टर की जिम्मेदारी यह है कि वे प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में परिपक्व बना सकें। यदि हम ऐसा करने में असफल होते है तो हम कलीसिया में पास्टर और अगुवे के रूप में अपनी बुलाहट में असफल होते हैं।

प्रत्येक विश्वासी के जीवन में ये बातें पूरी होनी चाहिए

चार बातें हैं जिन्हें पास्टर को चाहिए कि वे प्रत्येक विश्वासी के जीवन में पूरी होते हुए देखें। उन्हें निम्न क्षेत्रों में उन्नति और विकास देखने की इच्छा रखनी चाहिए:

- **वचन में**

  पास्टरों को देखना चाहिए कि कलीसिया में प्रत्येक सदस्य वचन में दृढ़ बनें।

- **आत्मा में**

  पास्टरों को देखना चाहिए कि कलीसिया में प्रत्येक सदस्य आत्मा में दृढ़ बनें।

- **मसीह के समान चरित्र में**

  पास्टरों को देखना चाहिए कि कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति मसीह की समानता में अपने चरित्र में विकास करे।

- **सेवा में**

  पास्टरों को देखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति सेवा के काम के लिए तैयार किया जाए।

अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का दास न होता (गलातियों 1:10)।

हम उस स्तर को समझें जिस स्तर तक हमें पास्टर और सेवक के रुप में बुलाया गया है। गलातियों 1:10 के अनुसार, यदि हम मनुष्यों को प्रसन्न करेंगे तो हम परमेश्वर के सेवक नहीं बन सकते। पास्टर होने के नाते हम यहाँ लोगों को खुश करने के लिए नहीं है। अतः आप कलीसिया में इसलिए आए हैं कि आपको प्रसन्न किया जाए तो आप गलत स्थान पर आ गए हैं, क्योंकि यदि हम केवल मनुष्यों को प्रसन्न करेंगे तब हम परमेश्वर के सेवक नहीं बन सकते। हमारा लक्ष्य आपको बनाने का है, न कि केवल आप को प्रसन्न करने का। परन्तु इस प्रक्रिया के दौरान आप प्रसन्न हो सकते हैं जो केवल एक बाहरी उत्पादन है।

आप पास्टर और कलीसिया को प्रेम करना आरम्भ कर सकते हैं परन्तु ये लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य है कि आपको मसीह में सम्पूर्ण बना कर प्रस्तुत करें। जिस दिन हम मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले बन गए, उस दिन हम परमेश्वर के सेवक नहीं रहेंगे।

- परमेश्वर के हृदय के अनुसार पास्टर होने के नाते पास्टर को **परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के लिखित वचन से आत्मिक ज्ञान और समझ से भरना चाहिए,** किसी और स्त्रोत से नहीं।
- सेवा का **काम-पास्टर का नहीं है** आपको करना है। आप सेवक हैं।
- पास्टर का प्रचार और शिक्षा देने का कारण यह **नहीं कि वे मनोरंजन करें परन्तु यह कि विश्वासियों को मसीह के समक्ष सिद्ध (टेलेइयोस) करके प्रस्तुत करें।**

2
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

निम्नलिखित निर्देश न केवल पास्टर के लिए लागू होते हैं परन्तु समस्त स्टाफ के लिए भी जो आपकी सेवा करते हैं।

अपने पास्टर की गवाही को सुरक्षित रखने में सहायता करना

यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला और सिखाने में निपुण हो (1 तीमुथियुस 3:2)

जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिन के बच्चे विश्वासी हों, और उनमें लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो। क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न कोध्री, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी हो (तीतुस 1:6,7)।

1 तीमुथियुस 3:2 के अनुसार एक आत्मिक अगुवे को "दोष रहित" होना चाहिए। और यह वचन परमेश्वर के सेवक अथवा सेविका की अन्य भागों को भी बताता चलता है। सबसे पहली माँग परमेश्वर आत्मिक अगुवे से चाहता है कि वह निर्दोष हो, जिसका अर्थ है कि कोई भी उसकी ओर उँगली न उठा सके और कोई दोष न लगा सके। अगुवे की साक्षी पूर्णरुप से सिद्ध होनी चाहिए।

हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए। परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से दरिद्रता से, संकटों से (2 कुरिन्थियों 6:3,4)।

"दोष लगाने का कोई अवसर न देना" स्तर है जिस तक परमेश्वर ने पास्टर और चर्च के स्टाफ को बुलाया है। हमें दोष रहित जीवन जीना चाहिए-हमें सेवा इस प्रकार करनी चाहिए ताकि हम दोष लगाने का कोई

अवसर न दें–तकि हमारी सेवा पर कोई देष न लगे। हमें यह करने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता है।

बड़े नाम से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चाँदी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है (नीतिवचन 22:1)।

आइए कुछ बातों पर ध्यान करें जहाँ आप पास्टर की साक्षी को सुरक्षित रखने में सहायता कर सकते हैं।

- यदि आप एक महिला हैं, तो कृपया अपने पास्टर से उसके कार्यालय में मिलें जब अन्य लोग भी उपस्थित हों। जोखिम भरे स्थानों और समयों पर अपने पास्टर से मिलने के लिए न कहें। आपकी बहुत महत्वपूर्ण आवश्यकता हो सकती है, परन्तु अपने पास्टर को असुविधा में डालकर अजीब स्थानों पर न मिलें। ध्यान दीजिए कि एक देखनेवाला क्या सोचेगा–एक पास्टर सार्वजनिक स्थान में कॉफी पीते हुए एक महिला को परामर्श दे रहा है। परन्तु वे लोग जो पास्टर को जानते हैं, कि यह एक चर्च का पास्टर है, विवाहित है और बच्चे हैं, वह यहाँ अकेला दूसरी महिला के साथ क्या कर रहा है। कल्पना कीजिए कि यह परामर्श का सत्र थोड़ा लम्बा चलता है। तब पास्टर की साक्षी अधिक जोखिम में पड़ जाती है। आपकी आवश्यकता चाहे कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, यह उचित होगा कि आप अपने पास्टर से उसके कार्यालय में मिलें, अन्थया आप परमेश्वर के जन की साक्षी नष्ट कर रहे हैं।
- यदि आप महिला हैं तो यह बेहतर होगा कि आप चर्च में महिला पास्टर/अगुवे से सहायता प्राप्त करें।
- पास्टर अथवा चर्च के विषय में कुछ भी ऐसा न कहें जिसके विषय में आप सौ प्रतिशत निश्चित नहीं है। यदि आप पूर्ण रुप से निश्चित नहीं है तो आप ऐसा न कहें। उदाहरण के लिए यदि आपका पास्टर अमरीका में रहा है और अब भारता आया है, तो यह न सोचे कि सेवा को चलाने के लिए वहाँ से डालर आ रहें हैं। कोई भी दावा

करने से पहले पूर्णरूप से निश्चित हों। हमारी कलीयिा के विषय में 99, प्रतिशत धन जो प्रयोग किया जाता है वह भारत में से ही आता है–दसमांश, भेंटे और कलीसिया के अनुदानों के द्वारा। संसार के किसी भी अन्य भाग से कोई भी कलीसिया हमारी सहायता नहीं करती है।

- कृपया अपने पास्टर और चर्च के द्वारा किए गए कामों को बढ़ाचढ़ा कर न बताएं। उदाहरण के लिए यदि आपकी कलीसिया बच्चों का होम चला रही है जिसमें आठ बच्चे हैं, तो इसे बढ़ाचढ़ा कर ऐसे न कहें, "कलीसिया एक विशाल अनाथालय चला रही है जिसमें बहुत सारे बच्चे हैं।"

अपने पास्टर के समय को बचाने में सहायता करें

इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो क्योंकि दिन बुरे हैं (इफिसियों 5:15–16)।

इफिसियों 5:16 हमें बताता है, "अवसर को बहुमूल्य समझों"– प्रत्येक मिनट जो हमारे पास उपलब्ध है उसे पकड़ लें और उसका सही प्रयोग करें। समय हम सबके लिए महत्वपूर्ण है। हमारी कलीसिया में हमारे स्टाफ को सप्ताह में 40 घण्टे काम करना आवश्यक है। आप पास्टर और कलीसिया के स्टाफ का समय बचाने में सहायता कर सकते हैं।

- कृपया पास्टर से उसके काम के घण्टों के दौरान मिलें। यदि पास्टर सुबह 8:30 से शाम 6:30 तक अपने कार्यालय में है, तो आप उससे यह निवेदन न करें कि वह शाम 7:30 तक अपने कार्यालय में रुका रहे ताकि आप अपना काम समाप्त करके सुविधानुसार उससे मिलें सकें। कभी–कभी पास्टर देर तक कर लोगों से मिलते हैं, परन्तु कृपया समझिये कि उनके पास भी परिवार हैं जिनके पास उन्हें जाना है। स्मरण करें कि जब आपको डाक्टर से मिलना होता

है, तो आप उसके द्वारा दिये गए समय पर मिलते हैं और उस दिन की छुट्टी भी ले लेते हैं। अपने पास्टर के साथ भी इसी प्रकार का व्यवहार करें। यदि आपकी आत्मिक आवश्यकता है और यह बहुत गम्भीर है तब आप अपने पास्टर से मिल सकते हैं बल्कि आप उस दिन काम से छुट्टी लेकर आवश्यक समायोजन कर सकते हैं ताकि आप पास्टर से अनावश्यक प्रतीक्षा न करवाएं।

- यदि आपके पास कोई विचार है तो उसे पास्टर को मानने के लिए विवश न करें। आपाका पास्टर विचारों और सुझावों के लिए खुला हो सकता है, परन्तु यदि आपके पास सेवा के लिए कोई विचार है, तो आप अपने पास्टर से यह अपेक्षा न करें कि वह आपके विचारों का पालन करे। प्राय: लोग पास्टर के पास विचारों को लेकर आते हैं और चाहते है कि परमेश्वर पास्टर की अगुवाई करे कि वह उस विशेष सेवा को आरम्भ करे। यदि आपके हृदय में एक तीव्र इच्छा है और आप निश्चित है कि परमेश्वर चाहता है कि आप कुछ आरम्भ करें, तब आप स्वयं उसे आरम्भ करने के लिए कदम उठाएं, लेकिन पास्टर की अनुमति के साथ।
- कृपया अपने पास्टर को पुस्तकों को पढ़ने के लिए न कहें। आप जानते हैं कि उसके घर में पुस्तकें हो सकती हैं जिन्हें उसने समय के आभाव के कारण नहीं पढ़ी है।
- कृपया अपने पास्टर को वे काम करने के लिए न कहें जो व्यवसायिक लोग करते हैं, उदाहरण के लिए विवाह हेतु उपयुक्त साथी ढूँढ़ना, घर आदि का क्रय-विक्रय। यदि आप स्थान बदल रहे हैं तो आप स्थानीय पास्टर को न लिखें कि वह आपके घर या कमरा ढूंढ़ने में सहायता करे। यद्यपि पास्टर आपकी सेवा के लिए है, परन्तु उनसे अपने लिए घर ढूँढ़ने के लिए कहना उनके लिए अच्छा नहीं है। अपने लिए उचित जीवन साथी ढूँढ़ने के लिए पास्टर पर दबाव न डालें। यदि कोई है और पास्टर सोचता है कि वह योग्य है, वह उस व्यक्ति को सुझाव दे सकता है। परन्तु इस प्रकार का दबाव पास्टर पर न डालें।

अपने पास्टर के परिवार की सुरक्षा करने में सहायता करें

तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है: "मैं चरवाहे को मारूँगा, और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी। (जकर्याह 13:7 से उद्धत)

- यदि शत्रु चरवाहे को मार सकता है तो वह भेड़ों को तितर-बितर कर सकता है। बहुत से लोग समझते हैं कि सेवा बहुत "सरल" होती है-शायद इसलिए कि पास्टर को प्रति रविवार 50 मिनट का प्रचार करना होता है और कलीसिया उसकी सुनती है। वह बहुत सी पुस्तकें लिखवाता है, वह अपने सन्देशों के बहुत से टेप और सी.डी. बेचता है। परन्तु इस बात को समझना है कि परमेश्वर के सेवक जो आपकी सेवा सामने की पंक्ति में करते हैं वे शैतान के गहन आक्रमण के लक्ष्य होते हैं। शैतान का इरादा होता है कि वह चरवाहे को मारे और इस प्रकार भेड़ों को नाश करे। पास्टर और परमेश्वर के सेवक औसत विश्वासियों की अपेक्षा अधिक गहन कठिनाईयों से होकर गुजरते हैं। अतः एक सबसे बड़ा इनाम आप अपने पास्टर या परमेश्वर के सेवक जो आपकी सेवा करता है को दे सकते हैं, वह है कि आप उनके लिए और उनके परिवारों के लिए लगातार प्रार्थना करें-उन्हें आपकी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। उनके चारों ओर सुरक्षा बन कर खड़े हों। अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उनको सुरक्षा का कवच प्रदान करें। शैतान को बताएं, "यदि तू मेरे पास्टर पर यह तीर चलाना चाहता है तो तुझे पहले मुझसे होकर गुजरना पड़ेगा। मैं यहाँ खड़ा हूँ।" यदि ऐसी पूरी कलीसिया हो जो पास्टर के लिए और सेवकों के लिए और उनके परिवारों के लिए जो आपकी सेवा कर रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हो तो एक मजबूत कलीसिया होगी क्योंकि उसके अगुवों को पूर्ण सुरक्षा प्राप्त है और शैतान चरवाहे को मारने के लिए कुछ नहीं कर सकता है।

चुने गए अगुवों के साथ काम करें और उनका सम्मान करें।

- आपका पास्टर सब कुछ नहीं कर सकता है। इसलिए सेवा की विभिन्न जिम्मेदारियाँ अन्य अगुवों को सौंपी गई हैं। सबसे अच्छा

काम जो आप कर सकते हैं वह यह है कि आप उन अगुवों का आदर, सहयोग करते हुए काम कर सकते हैं। आप पास्टर की सहायता करेंगे यदि आप सौंपी गई जिम्मेदारी का आदर करेंगे जो कलीसिया में रखी गई है। उदाहरण के लिए सदस्य की चिन्ता करनेवाला पास्टर, बच्चों की कलीसिया का पास्टर, समूह का पास्टर, युवकों हेतु पास्टर, आराधना के दल का अगुवा आदि। यदि आपकी कोई शिकायत है जिसे दूर करना आवश्यक है, तो उस विभाग के जिम्मेदार अगुवे को नजर अन्दाज न करें और सीधे पास्टर के पास न आएं। उन अगुवों का सम्मान करें जो विभिन्न सेवाओं के लिए नियुक्त किए गए हैं। उन्हीं के साथ उन बातों को उठाएं और उन्हें अनुमति दें कि वे उन्हें संभाले। यह न सोचें कि विशेष सेवा के अगुवे के पास अनुभव नहीं है। जब आप उन्हें समस्या के समाधान हेतु अवसर नहीं देंगे तो आप उनसे उनका अनुभव छीन रहे हैं। स्मरण रखें कि पास्टर का उन पर पूर्ण भरोसा है और आपकी सुनने से पहले वह उनकी सुनेगा।

जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझें जाएँ। क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, "दाँवने वाले बैल का मुँह न बाँधना," क्योंकि "मजदूर अपनी मजदूरी का हक्कदार है।" कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन"(1 तीमुथियुस 5:17-19)।

कलीसिया की बुलाहट और दर्शन के साथ चलें

यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों; तो क्या वे एक संग चल सकेंगे? (आमोस 3:3)।

और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है? (मरकुस 3:25)।

- प्रत्येक व्यक्ति जो स्थानीय कलीसिया का भाग है उसे कलीसिया के दर्शन और बुलाहट जिसे परमेश्वर ने उस कलीसिया पर रखा

है, के साथ चलना चाहिए। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया की विशेष बुलाहट होगी और प्रत्येक सदस्य को उस बुलाहट के साथ चलना सीखना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि एक स्थानीय कलीसिया की बुलाहट सैल चर्च बनाने की है तो उसके सदस्य यह नहीं कह सकते कि हम सेलग्रुप को पसन्द नहीं करते और किसी भी सैल ग्रुप के सदस्य नहीं बनेंगे। यह कार्य कलीसिया मिलकर कर रही है और इसमें प्रत्येक को शामिल होना चाहिए।

- जैसे-जैसे परमेश्वर कलीसिया के लिए योजनाएं प्रकट करता जाएगा वैसे-वैसे वह उन नई बातों को जो वह इस कलीसिया से चाहता है, जन्म देता जाएगा। अतः पास्टर और सेवा के अगुवों की सहायता करें। बदलावों और नई वस्तुओं का विरोध न करें जिनमें परमेश्वर उस कलीसिया को लेकर जा रहा है। एक ही दिशा में मिलकर चलते जाएं और अगुवों की सहायता करें।
- जब आप किसी कलीसिया में जाते हैं तो आपके मन में उस विशेष कलीसिया के विषय में पूर्व अनुमान होता है। अतः वह विचार आपको कलीसिया के दर्शन के साथ चलने में रुकावट हो सकता है। अतः आप को व्यक्तिगत लक्ष्यों को एक तरफ रखकर कलीसिया के साथ चलना चाहिए।
- कलीसिया के साथ "मोलभाव" न करें। ऐसे व्यक्ति न बनें जो तब तक कलीसिया में जाता है जब तक उसे वहाँ उसे कुछ मिलता रहे और उसे प्रसन्न रखा जाए। जिस दिन कलीसिया उसे प्रसन्न न करे वह उसी दिन कलीसिया छोड़ कर कहीं और चला जाता है। केवल इसकी खोज में न रहें कि आपको क्या मिल सकता है। यदि अधिक नहीं दे सकते तो उतना तो दें जितना आप प्राप्त करते हैं। यीशु ने कहा देना लेने से अधिक धन्य है (प्रेरितों के काम 20:35)। आपको निश्चय ही कलीसिया से बहुत वस्तुएं प्राप्त होंगी-ज्ञान और समझ, आप परिपक्व होंगे और एक ऐसे स्थान पर पहुँचेगें जहाँ आप मसीह में पूर्ण रूप से बढ़ेंगे।

कलीसिया के विश्वास और शिक्षा के साथ चलना

हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो (1 कुरिन्थियों 1:10)।

- सामान्यत: एक कलीसिया के आरम्भ होने से पहले उसका विश्वास और शिक्षा को उसके "विश्वास पत्र" में लिखा जाता है।
- कलीसिया का विश्वास पत्र "मोलभाव" करने योग्य नहीं होता और न ही चर्चा के लिए खुला होता है।
- कृपया आप किसी कलीसिया के भाग बनने से पहले उसके विश्वास पत्र और शिक्षा को पढ़ें।
- जब आप उस कलीसिया के भाग बन जाते हैं, तब उस के विश्वास पत्र को बदलने का प्रयास न करें। यदि आप उस कलीसिया के विश्वास और शिक्षा से सहमत नहीं हैं, आप इनमें से एक काम करने के लिए स्वतन्त्र हैं–कलीसिया के साथ सीखें और बढ़ें अथवा दूसरी कलीसिया ढूँढ़ें। यह कोई विवशता नहीं है कि आप इसी कलीसिया में बनें रहें।
- कृपया व्यक्तिगत बातें व्यक्तिगत ही रखें जो कलीसिया के विश्वास और शिक्षा से मेल नहीं खाती। उदाहरण के लिए, यदि कलीसिया बाइबल के सिद्धान्त के अनुसार पवित्रात्मा के बपतिस्मा, अन्य भाषा में प्रार्थना करने, ईश्वरीय चंगाई आदि में सहमत है तो कलीसिया से आशा की जाती है कि वह भी इसमें सहमत हो। कृपया कलीसिया का प्रयोग अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्रसारित करने में न करें जो कलीसिया के विश्वास और शिक्षा से मेल नहीं खाते। कृपया पास्टर व अन्य सेवा के अगुवों को आपके विचारों को मानने के लिए विवश न करें कि वे पत्र, ईमेल अथवा पुस्तकें भेजें जो विश्वास पत्र के विरोध में हैं।

एक सेवक बनें

उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ (इफिसियों 4:11-13)।

- इफिसियों 4:11-13 कहता है कि पाँच सूत्रीय सेवा प्रत्येक सन्त को सेवा के लिए तैयार करने के लिए दी गई है। पास्टर की इच्छा रहती है कि प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर का सेवक बने। वहाँ तक आपको पहुँचने में कुछ समय लग सकता है, परन्तु पास्टर और अगुवे होने के नाते हम चाहते हैं कि आप वहाँ पहुँचें। हम चाहते हैं कि आप ऐसे स्थान पर आएं जहाँ आप परमेश्वर की सेवा किसी भी क्षमता में करना आरम्भ करें। आप में से प्रत्येक को वरदान, गुण और योग्ताएं दी गई है। परमेश्वर ने आपके अन्दर धन रखा है। उसने आपके अन्दर बहुत सी वस्तुओं का निवेश किया है जिन्हें वह चाहता है कि अपने राज्य के लिए प्रयोग करे। पास्टर उस गुण को आपमें उभरता हुआ देखना चाहता है। परमेश्वर की सेवा करें और उसके सेवक बनें। आपके लिए कुछ समय तक आसन पर बैठना ठीक है, परन्तु जब आसन गरम हो जाए तब इससे उछल कर खड़ें जो जाएं!
- मसीह की देह में आपके लिए परमेश्वर ने एक विशेष स्थान रखा है। अपना स्थान ग्रहण करें और परमेश्वर प्रदत्त सेवा देह में करना आरम्भ करें। आप केवल कलीसिया के सदस्य ही नहीं है, बल्कि आप परमेश्वर के सेवक हैं। मसीह की देह में काम करना आरम्भ करें।

परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है (1 कुरिन्थियों 12:18)।

जब आप सेवा करना आरम्भ करते हैं तब कुछ मार्गदर्शन है जिसका आप अनुसरण कर सकते है।

- सबसे पहले, वरदानों से ऊपर चरित्र के महत्व को समझना चाहिए। पास्टर वरदान का उपयोग करने से पहले यह चाहेगा कि आपका चरित्र उत्तम हो, क्योंकि आपको चरित्र की आवश्यकता होगी जो इसके साथ-साथ चलेगा। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास कोई वरदान है, पास्टर आपको वरदान का प्रयोग करने के लिए अवसर देगा और साथ-साथ आपके चरित्र को भी देखेगा। यदि चरित्र विश्वासयोग्य है तो पास्टर अधिक अवसर देगा ताकि आप अपना वरदान प्रयोग कर सकें। यदि अभी तक चरित्र विकसित नहीं हुआ है, हम थोड़े समय के लिए आपको वहीं रखेंगे, जब तक व्यक्तिगत आदत, बात, रुकावट अथवा आचरण की समस्या पर विजय प्राप्त नहीं हो जाती। पास्टर आपको पहले दिन ही प्रोन्नत नहीं करेगा। आपको ऐसे चरित्र की आवश्यकता है जो आपको वाँछित स्थान पर पहुँचने के बाद वहाँ स्थिर रख सके, नहीं तो आप इस प्रक्रिया के दौरान अपने आपको तथा बहुत से लोगों को चोट पहुँचाएंगे।
- विश्वास को बनाएं। आपको अपने पास्टर का विश्वास जीतने का अधिकार है।
- लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित न करें। कुछ लोगों को जब परमेश्वर के भवन में सेवा की जिम्मेदारी दी जाती ह। तो वे बड़ी दूरी तक अपने आप को अन्य विश्वासियों के बीच में "प्रसिद्ध व्यक्ति" बनाने के लिए चलते जाते हैं। यह उनकी प्रसिद्धि पाने की इच्छा के फलस्वरुप होता है और अन्ततः वे लोगों को अपनी आरे आकर्षित करते है, न कि प्रभु की ओर। अतः जब आप सेवा करें तो, निश्चय करे कि लोग आपकी ओर आकर्षित न हों- परन्तु प्रभु की ओर आकर्षित हों।

- सबसे पहले अपनी सेवा को प्रदर्शित करें और तब लोग आपकी बुलाहट को पहचान लेंगे। अपनी बुलाहट का ढिंढोरा न पीटते फिरें ("मैं एक प्रेरित हूँ"), बिना इस सेवा को प्रदर्शित किए। थोड़ा सोचिए कि यह कितना मजाकपूर्ण लगेगा कि आपाका पास्टर यह कहता फिरे कि वह पास्टर है और उसके पास कलीसिया नहीं है। आप केवल उतना करें जिसके लिए आपको बुलाया गया है, तो आपकी बुलाहट और सेवा प्रकट हो जाएगी। लोगों को फल देखने दीजिए तब वे स्वयं पहचान लेंगे कि आप किस प्रकार के पेड़ है!
- अपने आप को सामने न लाएं। निमन्त्रण की प्रतीक्षा करें। यीशु ने कहा जब हम बड़े भोज में जाएं तब हमें सबसे पीछे की कुर्सी पर बैठना चाहिए और तब प्रधान को आकर हमें आगे बैठने का निमन्त्रण देने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यह अधिक आदर के योग्य बात है। विचार कीजिए कि आपकी आवाज बहुत अच्छी है और आप कुछ वाद्य संगीत बहुत अच्छा बजाने की योग्यता रखते हैं, तब आराधना के अगुवे को यह जाकर न बताएं कि आप कितने अच्छे संगीतज्ञ हैं और आपको बजाने का मौका मिलना चाहिए। इसके बजाए, केवल अपनी योग्यता बताएं और प्रतीक्षा करें कि आपको बजाने अथवा आराधना में अगुवाई करने के लिए बुलाया जाए। इस दौरान आपको आवाज की जाँच कराकर लगातार अभ्यास के लिए आना पड़ सकता है उससे पहले कि आप बजाएं।
- अपने पास्टर और अगुवों के प्रति जबावदेह बनें रहें। निर्देशों का पालन करते हुए सब बातों में साथ बने रहें। अपने उत्साह को सम्पूर्ण कलीसिया के दर्शन को पूरा करने में रूकावट न बनाएं।
- अपने प्रतिफल के लिए परमेश्वर की ओर देखें। बहुत से लोग अपने प्रतिफल को पाने के लिए पास्टर की ओर देखते हैं कि वह पुलपिट से उन्हें पहचाने अथवा उनकी तारीफ करे। यद्यपि यह सब कुछ सम्भव है, परन्तु ऐसा न होने पर निराश न हों और न ही कड़वापन आने दें। आप परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और आपका प्रतिफल उसी की ओर से आएगा।

समपर्ण को प्रदर्शित करें

और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के समाने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों (2 तीमुथियुस 2:2)।

- योग्यता से अधिक विश्वासयोग्यता महत्वपूर्ण है। पास्टर विश्वासयोग्य लोगों को ढूँढ़ता है। विश्वासयोग्य व्यक्ति पर आशीषें होती रहती हैं, परन्तु जो धनी बनने में उतावली करता है वह दण्ड पाएगा (नीतिवचन 28:20)।

- जब आप एक जिम्मेदारी लेते हैं, आप निश्चय करें कि इसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। उदाहरण के लिए, यदि आपने प्रत्येक रविवार 30 मिनट पहले आकर चर्च परिसर की सफाई के लिए समपर्ण किया है, तब कृपया निश्चय करें कि आप इसे प्रत्येक रविवार को करें। आप समर्पित और भरोसेमंद व्यक्ति बनें। यद्यपि इस काम के लिए आपको भुगतान नहीं किया जाता है। परन्तु आप स्वेच्छा से यह कर रहे हैं, तो स्वेच्छिक सहायता करने में समर्पित बने रहें।

- पास्टर समझता है कि कभी-कभी अचानक ऐसी परिस्थितियों आती हैं जब ऐसा करना आपके लिए असम्भव होगा। यदि आप उस काम को करने में असमर्थ है तो निश्चय करें कि आप जल्दी से जल्दी यह बात पास्टर को बता दें।

- आप जो कुछ करते हैं उसका आनंद उठाएं। वह व्यक्ति जो कुड़कुड़ाकर कोई काम करता है वह अच्छा नहीं होता है। यदि किसी काम में आपको आनन्द नहीं आ रहा है तो अच्छा यह होगा कि आप उसे न करें।

- इसे प्रभु के लिए करें न कि पास्टर के लिए। याद रखें आपको केवल पास्टर को प्रसन्न करने के लिए कोई काम नहीं करना है, इसे प्रभु के लिए करें।

उत्तमता का पीछा करें

- जो कुछ आप करें, उसे ठीक ढंग से करें। परमेश्वर को अपना सबसे उत्तम भाग दें। प्राय: हम सोचते हैं, "आखिरकार मैं यह काम स्वेच्छा से कर रहा हूँ, मैं इसे केवल सेवा हेतु कर रहा हूँ।" आपका आचरण ऐसा नहीं होना चाहिए जब आप प्रभु के लिए कुछ कर रहे है, इसे अच्छे ढंग से और अपनी सबसे अच्छी परमेश्वर प्रदत्त योग्यता के साथ करें। परमेश्वर आपके पास से सबसे अच्छा भाग लेने के योग्य है!

राज्य के बनाने वाले बनें

- जब आप सेवा करते हो तो अपने आप को स्मरण कराएं कि आप किसी विशेष स्थानीय कलीसिया की सेवा नहीं कर रहे है बल्कि परमेश्वर के राज्य को बना रहे हैं। याद रखें कि आप यह राजाओं के राजा हेतु कर रहे हैं, यद्यपि आप स्थानीय कलीसिया के भाग हैं। आप यह परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए कर रहे हैं। स्थानीय कलीसिया के नाम के परे देखें जिसकी आप सेवा कर रहे हैं, क्योंकि यह केवल एक नाम ही है।

- अपनी स्वार्थपर्ता और स्वयं केन्द्रीयकरण को अलग रखें। अपनी स्थानीय कलीसिया को प्रोन्नत करने के लिए कुछ भी न करें। याद रखें कि आप यहाँ पर विशेष रुप से परमेश्वर के राज्य को प्रोन्नत करने के लिए रखे गए हैं। हर समय मसीह की महिमा करें।

- अन्य सेवकों, सेवाओं और कलीसियाओं के बीच एकता को बढ़ावा दें। अन्य कलीसियाओं के विश्वासियों के साथ संगति करने में न डरें। राज्य के बनाने वाले बनें। परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचें। अपने आप से पूछें कि परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए आप क्या कर सकते हैं और किस प्रकार कलीसियाओं और सेवाओं के साथ मिलकर काम कर सकते हैं ताकि मसीह हमारे बीच में महिमा पा सके।

- अपने पास्टर की गवाही को सुरक्षित रखने में सहायता करें
- अपने पास्टर के समय को बचाने में सहायता करें
- अपने पास्टर के परिवार की सुरक्षा करने में सहायता करें
- चुने गए अगुवों के साथ काम करें और उनका सम्मान करें।
- कलीसिया के विश्वास और शिक्षा के साथ चलना
- एक सेवक बनें
- समपर्ण को प्रदर्शित करें
- उत्तमता का पीछा करें
- राज्य के बनाने वाले बनें

3
आपका पास्टर एक मनुष्य है

कभी-कभी लोग भूल जाते हैं कि उनका पास्टर भी मानव है-इच्छा रखने वाला एक मनुष्य है (वह भी रिची रेस्टोरैण्ट की बिरयानी पसन्द करता है।) इन बातों को मस्तिष्क में रखते हुए, यहाँ कुछ व्यवहारिक निर्देश दिए गए हैं:

- एक मनुष्य के विषय में बढ़चढ़ कर न सोचें। कुछ लोग अपने पास्टर को "सुपरस्टार" समझते हैं और समझते है कि उनका पास्टर एक "सुपरमैन" है। यह एक स्पष्ट सत्य है कि आपका पास्टर एक "सुपरस्टार" नहीं है और निश्चय ही वह एक "सुपरमैन" नहीं है, अतः उसका 'अभिषेक' सुपरमैन से न करें। एक मनुष्य के विषय में बहुत बढ़चढ़ कर सोचना अधर्म और अनुपयुक्त है। परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवे का सम्मान करें परन्तु कभी भी अनावश्यक महत्व किसी मनुष्य का न दें।

इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करें, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है (1 कुरिन्थियों 3:21)।

हे भाइयो, मैंने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना (1 कुरिन्थियों 4:6)।

- अपने पास्टर पर निर्भर न रहें। आपको आत्मिक रूप से बढ़ने की आवश्यकता है और प्रभु के साथ अपने आप चलना सीखना होगा। यद्यपि आपका पास्टर आपकी सहायता के लिए है तौभी प्रत्येक विश्वासी को प्रभु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करना होगा। अपने आप परमेश्वर का वचन पढ़ना, अध्ययन करना और उससे

सीखना होगा। आपको अपने आप प्रार्थना करना और परमेश्वर मे विश्वास सीखना होगा। आत्मिक नर्सरी से अपने आप को स्नातक बना कर एक ऐसे माता-पिता बनें जो अन्य लोगों को विश्वास में बढ़ा सकें।

- आपका अभिषेक परमेश्वर की ओर से आता है। यद्यपि यह सच है कि आत्मिक आदान-प्रदान अभिषिक्त अगुवों के द्वारा होता है, परन्तु स्मरण रखें कि अन्ततः आपका अभिषेक परमेश्वर की ओर से आता है। यह परमेश्वर ही है जो अभिषेक करता है। आपके पास आपके पास्टर के अभिषेक की छायाप्रति (फोटोकॉपी) नहीं है। आपको अपनी अभिषेक और वरदान स्वयं परमेश्वर से प्राप्त करके उन्हें पास्टर और अगुवे जो आपके स्थानीय कलीसिया में है, वह आपके द्वारा प्रभु से प्राप्त अभिषेक को बढ़ा सकता है। परन्तु अन्ततः आपका अभिषेक परमेश्वर के साथ आपकी चाल पर निर्भर है।

यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता"(यूहन्ना 3:27)।

और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है (2 कुरिन्थियों 1:21)।

- शीघ्रता से न्याय न करें। अनावश्यक अथवा अवास्तविक अपेक्षाओं के कारण लोग बहुत आलोचक बन कर आसानी से अपने पास्टर को पीठ दिखाते हैं, यदि वे किसी प्रकार उनकी अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते। ऑल पीपुल्स चर्च में मैं ऐसी कलीसिया पाकर आशीषित हूँ जो बहुत ही सहायक और बहुत समझदार है। फिर भी स्मरण दिलाने हेतु मैं यह कहना चाहता हूँ कि अपने पास्टर का न्याय करने में जल्दबाजी न करें। आपका पास्टर आपकी तरह का बढ़ने वाला काम है, एक ऐसे भवन की तरह जो अभी भी निर्माणाधीन है। अतः सभी गड़बड़ी वाली बातों को क्षमा करते हुए कृपया धैर्यवान बनें।

परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं स्वयं अपने आप को नहीं परखता। क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखन ेवाला प्रभु है। इसलिये जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो: वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा, तब परमश्ेवर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी (1 कुरिन्थियों 4:3-5)।

- आपका पास्टर एक "सुपरस्टार" नहीं है और निश्चय ही वह एक "सुपरमैन" नहीं है, अतः **उसका 'अभिषेक'** सुपरमैन **से न करें।**
- **अपने पास्टर पर निर्भर न रहें।** आपको आत्मिक रूप से बढ़ने की आवश्यकता है और प्रभु के साथ अपने आप चलना सीखना होगा।
- **आपका अभिषेक परमेश्वर की ओर से आता है।** यद्यपि यह सच है कि आत्मिक आदान-प्रदान अभिषिक्त अगुवों के द्वारा होता है, परन्तु स्मरण रखें कि अन्ततः आपका अभिषेक परमेश्वर की ओर से आता है।
- **अपने पास्टर का न्याय करने में जल्दबाजी न करें।** आपका पास्टर आपकी तरह का बढ़ने वाला काम है, एक ऐसे भवन की तरह जो अभी भी निर्माणाधीन है।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्‌देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्‌देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

नोट्स

हममें से जो माता–पिता है वे जानते है कि जब हम बच्चों को पालते है तक कभी–कभी बहुत क्रोधित हो जाते है, यद्यपि हम प्राय: उन पर प्रेम की बौछार करते है। यह इसलिए नहीं कि हम अपने बच्चों से घृणा करते है बल्कि इसलिए कि हम उन्हें एक मजबूत व्यक्ति की तरह खड़ा करना चाहते है। इसी प्रकार जब हम कलीसिया में मजबूत लोग खड़े करना चाहते है, तब हमें उन्हें यह सिखाने की आवश्यकता होती है कि उन्हें परमेश्वर के भवन में कैसे व्यवहार करना चाहिए।

दुर्भाग्यवश, इस विषय में अधिक शिक्षा नहीं दी जाती है और प्रत्येक जन अपनी मन मर्जी से चलता रहता है। कलीसिया में लोग वही करते है जिसे वे ठीक समझते है और कलीसिया को विभिन्न दिशाओं में खींच कर ले जाते और कलीसिया कहीं नहीं पहुँच पाती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति वही करता है जो उसे ठीक जान पड़ता है तो हमारा घर झंझट और गड़बड़ी से भरा होगा। परन्तु परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है।

एक मजबूत कलीसिया को बनाने, की इच्छा से इसमें मजबूत लोगों को खड़ा करने की इच्छा से मैं यह संदेश बाँट रहा हूँ– “अपने पास्टर की सहायता कैसे करे।” मैं विश्वास करता हूँ कि आप ऐसा करने में मेरे हृदय की प्रेरणा को समझेंगे।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org